IJAER/April-may 2015/Volume-4/Issue-3 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

धर्मवीर भारती के उपन्यासों की कथा संवेदना

डॉ. लोकेश कुमार शर्मा

व्याख्याता (हिन्दी साहित्य)

राजकीय महाविद्यालय टोंक (राज.)

सार

डॉ0 धर्मवीर भारती के समकालीन उपन्यासकारों में प्रमुख रूप से अज्ञेय जी, जैनेंद्र कुमार, भगवती चरण वर्मा, यशपाल, इलाचंद्र जोशी आदि प्रमुख हैं। इन सभी उपन्यासकारों का कथ्य व शिल्प भारती जी के कथ्य व शिल्प के अधिक निकट है। इन सभी के उपन्यासों में जीवन के यथार्थ का गहन व वास्तविक चित्रण है। ये प्रगतिवादी समाज के बदलते परिवेश को लेकर आगे बढ़े । उनकी रचनाओं में मार्क्सवाद व फ्रायडवाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। डॉ. धर्मवीर भारती के उपन्यासों में पुरानी सामाजिक मान्यताओं एवं प्रगतिवादी समाज की बदली हुई परिस्थितियों से उत्पन्न नवीन मान्यताओं के मध्य संघर्ष की भावभूमि प्रमुखता से विद्यमान है।

कीवर्ड : *धर्मवीर भारती , कथा संवेदना*

प्रस्तावना

भारती जी ने कहानियों का कथानक आंतरिक प्रेरणाओं से भी ग्रहण किया है और बाह्य संदर्भो से भी। सरलता एवं स्पष्टता उनकी कहानियों की विशेषता है। भारती जी ने जीवन के सत्य को अंकित करने में कहीं भी बौद्धिकता का आश्रय नहीं लिया यही कारण है कि उनके पाठकों की संख्या अधिक है।

वस्तुतः उपन्यास और लघुकथा के बीच लंबी कहानियों की पृथक प्रकृति होती है। इनमें मूल संवेदना गहराती–गहराती इतनी सघन होती जाती है कि पाठकीय चित्त अपने व्यापक बोध परिवेश के साथ रंग जाता है। किन्तु फैशन जीवी लंबी कहानियों में, जिनमें जिये जाते जीवन के नाम पर किसी टेकनीक, किसी फार्मूले का प्रयोग होता है, यह मर्मस्पर्शिता नहीं होती है। इनमें बौद्धिक चमत्कार चाहे जिस तेवर में निकलते चलें पर हृदयस्पर्शिता नहीं होती।1 स्वाभाविकता एवं लोक संपृक्ति कहानियों का आदि से अंत तक ऐसा कसा हुआ सहज स्वर और संगीत है जो कहानियों को जीवंत बनाता है। यही जीवंतता हमें धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में मिलती है।

कथा साहित्य के क्षेत्र में अज्ञेय के बाद भारती का नाम इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि ये अज्ञेय के समान अभिजात्यपूर्ण नायकों को न उठाकर मध्य वर्ग के लिए नायकों को आधार बनाकर उनके प्रेम और विकृति को शब्द देते हैं। उन्होंने दो उपन्यास लिखे हैं–गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा। उनके मनोवैज्ञानिक होने का प्रमाण है। यह केवल दो कारणों है एक मन में स्थित दमित काम–वासना और उससे उत्पन्न असामाजिकता का पक्ष दूसरा उपन्यास में चित्रित कथावस्तु में लेखक का निजी दर्शन और मनोवैज्ञानिक भाव। इन दोनों के ही सामंजस्य से कृतियों में वैयक्तिकता तो उभरी ही है, साथ ही मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि प्रबल हो गयी है। श्गुनाहों का देवताश उपन्यास मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। युवा मन का सजीव चित्र अंकित करने में भारती जी पूर्ण सफल हुए हैं।

कथानक

उद्देश्य

उपन्यास की सारी कथा किसी इति वृत्त की भांति ही वर्णनात्मक नहीं होती। पात्र यथावसर अपने वार्तालाप, स्वकथन अथवा कथोपकथन द्वारा उसे गति देते हैं। पात्रों के इस आलापदृसंलाप को ही संवाद का नाम दिया गया है। उपन्यास के पात्र वस्तुतः भारती जी की कहानियों का उद्देश्य भावात्मक संबंधों की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारती जी की धर्मवीर भारती के कथा–साहित्य का वैशिष्ट्य बनाने के लिए उसका पति उसे लेने आया है, किंतु उसमें आशा और विश्वास है कि शायद सौत का राज नहीं चल पाये।

भारती जी कथा–साहित्य में मार्मिकता के साथ–ही–साथ जीवन का स्वच्छ दृष्टिकोण भी निहित है। आज के मशीन युग में नैतिकता का प्रश्न जटिल है। जिस धरातल पर आज समाज खड़ा हुआ वहाँ उसे पुरानी मान्यताएँ तो समाप्त कर दी है, परंतु जीवन के नये आदर्शों को ढालने में वह असफल रहा है। भारती जी का उद्देश्य ऐसे ही समाज में एक स्वस्थ प्रेम की भावना को विकसित करना है। भारती जी के कथा–साहित्य ने हर क्षेत्र में नये आयामों का संस्पर्श किया। उन्होंने युगबोध और समकालीन परिवेश को अपने सृजन के माध्यम से रूपायित किया। मानवतावादी दृष्टिकोण से संपृक्त उनका साहित्य संपूर्ण विश्व में शांति का आकांक्षी है।

धर्मवीर भारती के कथा–साहित्य का वैशिष्ट्य

कथा साहित्य को आम लोगों के दुःख–सुख से जोड़ने के सिलसिले में गांव–शहर, कस्बा दृगली और दुकान मकान की जो कहानियाँ आयी है उनमें भारती जी की ष्बंद गली का आखिरी मकानश का विशेष महत्त्व है, जो सहमे, घुटे लोक जीवन का प्रमाणिक दस्तावेज है। इस प्रकार सील से भरे घर, टूटे मन, अंदर–बाहर अंधकार, हर चीज का कुढ़न, गलियों के टूटे रिश्ते, आम आदमी की रहाइसि को गहराई से चित्रित करने वाले मात्र चार लंबी कहानियों का संग्रह श्बंद गली का आखिरी मकानश हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान का अधिकारी है।

भारती जी ने अपने पात्रों को यथार्थ जीवन से चुना है और उसी यथार्थता से उन्हें प्रस्तुत भी किया है। उनके कथा साहित्य के पात्रों में अपूर्व सप्राणता ही नहीं यथार्थ की गहरी पकड़ भी परिलक्षित होती है। भारती जी की कहानियों में उनके पात्र एवं स्थितियां यथार्थ जीवन के लोगों एवं स्थितियों की स्थानापन्न बनकर ही उभरी हैं। यही कारण है कि वे हमारे जीवन के विभिन्न रंगों के सजीव एवं यथार्थ चित्रण प्रतीत होते हैं और उद्वेलित करते हैं।

भारती जी का कथा साहित्य अनुराग मन का पाठ है, जिसमें प्रेम का स्थान प्रथम है। अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने समाज को नई प्रेरणा दी है। 'गुलकी बन्नोश कहानी में गुलकी की पीड़ा व्यक्तिगत न होकर पाठक की पीड़ा हो जाती है। श्सावित्री नंबरश दो कर्त्तव्य बोध का पाठ पढ़ाती हैं, पर अंत में पीड़ा की अनुभूति छोड़ जाती है। श्यह मेरे लिए नहीं जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करती है। श्कुलटाश कहानी में स्त्री के प्रति सामाजिक नजरिये को यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है।

भारती जी ने आधुनिक समाज के मध्य वर्ग के पात्रों की यथार्थवादी आधार भूमि पर मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। जहाँ जल्लाद जैसे निम्न स्तर के पात्र से लेकर उच्चतम स्तर के पात्रों को कथा साहित्य में स्थान मिला है। फिर भी हम कह सकते हैं कि उनके साहित्य में सामान्यतः मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग के पात्र भी अधिक हैं। उन्होंने भारतीय समाज में नारी की दशा एवं दिशा को यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान की है। पात्रों का

भारती जी के कथा साहित्य की प्रमुख विशेषता है लोक जीवन की व्यथा कथा एवं दबे घुटे दर्दीले वातावरण का जीवंत चित्रित, चित्रण इस प्रकार है कि पाठकों की सहानुभूति उन्हें सहज ही। प्राप्त हो जाती है।

मानव–जीवन के प्रतिबिंब होते हैं अतएव उनकी बातचीत की कसौटी भी मानव की बातचीत ही होती है किसी भी उपन्यास की सफलता के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है।

उनकी कहानी श्सावित्री नंबर दोश में सावित्री की पीडा एक नये कोण से उठती है–शरीर की पीड़ा बनाम मन की पीड़ा। इस कहानी में क्षयग्रस्त सावित्री भारतीय नारी के पवित्रता बोध के संदर्भ में साक्षात व्यंग्य जैसा चित्रित है।

भारती जी के उपन्यासों के पात्र सजीव हैं और सहसा ही मानवीय अस्थिमज्जा में पाठक के सम्मुख आ खड़े होते हैं। श्गुनाहों के देवताश में आधार स्तंभ चन्दर तथा सुधा दो पात्र हैं। भारती जी ने दोनों पात्रों के माध्यम से मध्यवर्गीय युवकों और युवतियों का स्वरूप उद्घटित कर उनके चरित्र में तथाकथित उदात्ता लाने हेतु उनसे बहुत कुछ करवाया है। गेसू और बंटी एक गौण और सामान्य चरित्र है। अन्य पात्र में सुधा, पम्मी, डॉक्टर शुक्ला आदि हैं।

लेखक की टिप्पणी संकेत तथा पात्र के कथन भी इस दृष्टि से उल्लेख्य हैं। संबंध विच्छेद अथवा पारिवारिक जीवन में जो एक प्रकार की खंडनात्मक स्थिति पनप रही है उसके लिए काफी अर्थों में समाज को दोषी ठहराया गया है दृ पर्याप्त समय में प्रचलित मान्यताएं जीर्ण–शीर्ण (समय स्थिति विपरीत) होने पर उनका अंधानुकरण कहाँ तक न्यायसंगत है, विचारणीय समस्या है। डॉ. शुक्ला का भी इसी प्रकार का अभिमत है –सुधा का विवाह कितनी अच्छी जगह किया गया, मगर सुधा पीली पड़ गई है। कितना दुःख हुआ देखकर और बिनती के साथ यह हुआ द्य4

भारती जी के उपन्यास श्सूरज का सातवां घोड़ाश में माणिक मुल्ला की भंगिमाओं का वर्णन है, वह वार्तालाप करता है, अपने शब्दों में उनके सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत करता है, बीच–बीच में टिप्पणी भी करता है और उनसे सुनी कहानी को अपने शब्दों में व्यंग्य द्वारा धारदार बनाते हुए प्रस्तुत करता है।

श्सूरज का सातवां घोड़ाश उपन्यास में मुख्य पात्र माणिक मुल्ला है। माणिक मुल्ला कमोवेश सभी कहानियों में विद्यमान है। वह कहानियों का श्रावयिता भी है। वह मध्य वर्ग का प्रतिनिधि पात्र होने के साथ समाज की झूठी मर्यादा, रीति–रिवाज, जाति प्रथा तथा आर्थिक विषमता के प्रति क्रूद्ध भी है।

भारती जी ने संवाद रूप में टिप्पणियों को प्रस्तुत कर कथा को नाटकीय बनाया है तथा व्यंग्ययुक्त वार्तालाप में भी सर्जनात्मक भूमिका पूरी की है। देशकाल या वातावरण का संबंध घटनाओं या पात्रों से होता है, कथानक को स्वाभाविक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए इसका उपयोग लेखक करता है।

संवाद

भारती जी ने अपनी कहानियों में संवादों के माध्यम से व्यक्तित्व को उभारा है जैसेदृश्बंद गली का आखिरी मकानश– श्गुलकी बन्नोश– घेघा बुआ ने रास्ते पर पड़ी गुलकी को उठाते हुए बिगड़कर कहा है – श्औकात रत्ती भर नै, और तेहा पौवा भर।श छोटे बच्चों का अवधी बोली में सवाल–जवाब करते हुए बुढ़िया का खेल खेलना बड़े ही सरस रूप में उपस्थित किया गया है। कहानी के संवाद छोटे पर अर्थपूर्ण है। ष्कुलटाश कहानी में संवाद पात्रों की मनःस्थिति को स्पष्ट करने में सहायक हुए हैं। लाली के संवाद उसकी दीनता, विवशता को प्रगट करते हैं तो भइया के संवाद लाली के प्रति उनके शक को –– ष्जैसे तो यह ढंग निकाला है ! कमीनी ! बदजात ! नहीं भैया, मगर ———— मगर उसने कोई और बात नहीं की।

भारती जी कहानियों में वातावरण का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है, श्हरिनाकुस और उसका बेटाश कहानी पर गांधीवाद का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है और यही ह्रदय परिवर्तन कहानी के वातावरणको भी परिवर्तित कर देता है।

इसी प्रकार श्कुलटाश कहानी में श्कुलटाश नाम देकर ऐसा वातावरण निर्मित किया कि लाली को लोग दुश्चरित्र समझने लगते हैं। अभी इन लोगों का ढंग नहीं जानते ! पूरी कुलटा है यह।

भारती जी ने श्चाँद और टूटे हुए लोगश में मानवीय संबंधों को रागात्मक एवं यथार्थ धरातल पर एक साथ प्रस्तुत करना चाहा है। एक ऐसा वातावरण जो प्रेम के विषय में तीन दोस्तों के मन की विचित्र आकांक्षाओं, समस्याओं एवं प्रश्नचिन्हों से भरा हुआ है, इस प्रकार भारती जी ने सामाजिक वातावरण को संबंधों, समस्याओं एवं भावना इन तीनों समस्याओं से युक्तकर इनके सामंजस्य को समाधान के रूप में प्रस्तुत किया है।

क्यों किसी पर तोहमत लगाते हो !

तोहमत ! जानते हो विधवा है यह। दूसरा ब्याह किया है मैंने पहले ही दिन कह दिया था ———

लेकिन इतने से ही दुश्चरित्र कैसे हो गयी ?3

इस प्रकार भारती जी ने संवादों में आये शब्दों के द्वारा पात्रों की मनःस्थिति को रूपायित किया है। संवाद छोटे, रोचक तथा गतिशील हैं। उनकी कहानियों में संवादों के कारण पात्रों का व्यक्तित्व सहज ही उभर जाता है।

श्गुलकी बन्नोश का वातावरण कथा को सजीव बनाने में सहायक हुआ है। तो श्बंद गली का आखिरी मकानश में खोखली आधुनिकता पर व्यंग्य के साथ व्यक्ति के वस्तु से लगाव को चित्रित किया है। जो जिंदगी के मायने बदलकर अलग वातावरण बना देता है। इसी प्रकार श्गुनाहों के देवताश उपन्यास कथ्य एवं वातावरण के प्रभावी चित्रण के कारण प्रभावोत्पादक बन गया है। सुधा से संबंधित वातावरण की सृष्टि रचना में भारती जी का लेखन अद्भुत है।

कहानी संग्रह

साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब है। जीवन के विविध व्यापार, क्रिया–कलाप एवं घात–प्रतिघात मानव– हृदय को उद्वेलित करके जिन रागात्मक अनुभूतियों को जन्म देते हैं उन्हीं की शब्दार्थमयी अभिव्यक्ति साहित्य है। इस अभिव्यक्ति के अनेक रूप हैं जिनमें से कहानी भी एक है।1 कहानी का जन्म कब हुआ, यह बताना कठिन है, कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति मनुष्य में जन्मजात है। कहानी या कथा का अर्थ 'कहना' है, अर्थात् जा` कुछ कहा जावे वह कहानी है। इसलिये कहा जा सकता है कि मनुष्य ने जब से बोलना सीखा, कहानी का जन्म उसी समय से हुआ। संसार के समस्त प्राचीन साहित्य में कहानी का रूप मिलता है। मनुष्य की जिज्ञासा और कौतूहल से कथा का जन्म हुआ। रहस्यमयी प्रकृति, उसकी मनोहरी छटा आ ैर जगत् के कार्य व्यापार ने मनुष्य के मन मे ं जिज्ञासा कौतूहल और आश्चर्य के भाव भरे। वह इसके पीछे कौन सी रहस्यमय शक्ति है ? यह जानने की चेष्टा करने लगा। जैसे–जैसे उसकी बुद्धि का विकास हुआ, प्रकृति के रहस्य खुलते गये उसके मन में कौतूहल का भाव वेदों की स्तुतियों में देखने का` मिलते हैं, जिनमें कहानी के बीज देखे जा सकते हैं।

कथा या कहानी के प्रति मनुष्य की शुरु से ही अर्थात् आदिम काल से ही अत्यधिक रुचि और उत्सुकता रही है। कहानी सुनना और सुनाना उसकी जन्मजात प्रवृत्ति है इसलिए वह उसके प्रति सजग भी रहा है। आदिमकाल में जब आज के जैसे मनोरंजन के आधुनिक साधन नहीं थे, जब दिनभर काम कर के थका–मांदा व्यक्ति जब घर लौटता था तब भोजनादि के बाद समवयस्क लोग इकट्ठे होकर कहानी सुनकर अपना मनोरंजन कर लेते थे। तब कहानी या कथा सुनाने के लिए खास किस्म के कथावाचक लोग होते थे। समय परिवर्तन के साथ कुछ बदलता चला गया परन्तु मनुष्य की मूल–प्रवृत्ति कथा रुचि नहीं बदली उसके आयाम भले ही बदल गए हो, संदर्भ बदल गए हो, परन्तु प्रवृत्ति अब भी बाकी है।

कहानी क्या है ? इसका उत्तर किसी एक सुनिश्चित अथवा प्रामाणिक परिभाषा में नहीं दिया जा सकता क्योंकि कहानी मानव–जीवन का वह खण्डचित्र है जिसकी कोई निश्चित सीमा–रेखा नहीं आ ैर जिसमें किसी एक ही पक्ष की अनिवार्यता नहीं। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है – "नदी जैसे जलस्त्रोत की धारा है, मनुष्य वैसे ही कहानी का प्रवाह है।" कहानी को परिभाषाओं में बाँधकर कोई निश्चित रूप दे पाना कठिन है। फिर भी इसकी स्थिति, इसकी गति आ ैर इसकी आभा

को कई प्रकार के दृष्टिकोणों से समझने–समझाने का प्रयत्न किया गया है। जैसे प्रेमचन्द ने कहानी को जीवन के किसी एक अंग को प्रदर्शित करने वाली रचना माना है। तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल किसी सामान्य घटना को गंभीर मनोभाव में परिवर्तित करने वाली विधा को कहानी मानते हैं। प्रसिद्ध पाश्चात्य समीक्षक एडगर एलन पो इसे एक ही बैठक में पढ़ा जाने वाला प्रभावपूर्ण आख्यान मानते है। अज्ञेय इसे जीवन की प्रतिच्छाया मानते हैं।

कहानी का अल्पकाल में इतना तीव्र और ओजपूर्ण विकास हुआ कि उसकी परिभाषा देना कठिन हो गया है। उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर हम उसे पहचान सकते हैं किन्तु विविधता के कारण किसी एक सीमित दायरे में बांध नहीं सकते।

1. विद्वानों द्वारा दी गई विभिन्न परिभाषाओं के परिप्रेक्ष्य में कहानी की निम्न विशेषतायें कहीं जा सकती हैं :
2. कहानी अपने आप में पूर्ण वह रचना है जो जीवन के किसी एक अंग का उद्घाटन अपने लघु आकार में रोचकता से करती है।
3. उसमें मनोरंजन के साथ ही जीवन की शाश्वत समस्याओं का प्रकाशन होता है।
4. वह एक निश्चित लक्ष्य या संवेदनात्मक अन्विति को लेकर लिखी गई कलात्मक गद्य रचना है।
5. जीवन की मार्मिक अनुभूतियों या तथ्यों की व्यंजना में तारतम्य होता है।
6. कहानी में कौतूहल उतार– चढ़ाव और प्रभाव की एकता रहती है, अंत तुष्टिकारक होता है।

कहानी की विशेषताओं के आधार पर कहा जा सकता है कि "कहानी वह कला है जो मानव के बाह्य जीवन ओर उसके अन्तःस्थल में बनते–बिगड़ते हुए समूहों और समस्याओं को क्षणिक विद्युत्–प्रकाश की भांति सामने ला छोड़ती है और पाठक का मन एवं मस्तिष्क उसके भावों से घनीभूत हो जाता है। धर्मवीर भारती जी ने निम्न एवं मध्यमवर्ग के यथार्थ को लेकर अनेक श्रेष्ठ कहानियां लिखी हैं। उन्होंने कम लिख है पर निरन्तर बेहतर लिखना ही उनका लक्ष्य रहा है। वे वस्तुतः सामाजिक परिधि की यथार्थता को अभिव्यक्ति देने वाले कहानीकार हैं। इसलिए उनकी कहानियों में समष्टि–चिन्तन का ही प्रकाश हुआ है। उन्होंने समाज के कटु यथार्थ को बहुत निकट से देखा है, स्वयं झेला है और स्वानुभूति के स्तर पर लाकर उसका प्रभावशाली चित्रण भी किया है। चूँकि वे सफल कवि भी हैं, इसलिए उनकी कहानियों में काव्यत्मकता के साथ मधुरता का आ जाना स्वाभाविक ही है, पर यह उन्हें सत्य–विमुख या अतिरिक्त रूप से भावुक नहीं बनाती, वरन् उनकी कहानियों में अपूर्व संवेदनशीलता उत्पन्न करती है।

भारती जी का सम्पूर्ण रचनात्मक साहित्य पाठक को एक ऐसे कगार पर खड़ा करता है, जहाँ उसे स्वयं निर्णय लेना पड़ता है। कारण लेखक की दृष्टि का दोहराव है। अभिप्राय यह कि इनके साहित्य में जहाँ अनुभव की प्रौढ़ता है, वहाँ चंचलता की काल्पनिक उड़ान भी है।

धर्मवीर भारती की कहानियाँ बहुत अधिक नहीं हैं, पर हैं महत्वपूर्ण। निर्मल वर्मा लिखते हैं – "उत्तर–पूर्वी भारत की कस्बायी जीवन का ताना– बाना जितने महीन रेशों से भारती ने अपने कथा–विन्यास में बुना है, उतना शायद ही किसी समकालीन हिन्दी लेखक ने।"

धर्मवीर भारती की कहानी में असली आधुनिकता को खोजा और पाया जा सकता है। यह पश्चिम की नकली आधुनिकता से अलग है।6 यह आधुनिकता सत्य के आलोक में प्रकाशित हो रही है। भारती जी का संपूर्ण कथा संग्रह इसका प्रमाण है। हम उनके कथा संग्रह का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार कर सकते हैं –

चाँद और टूटे हुए लोग –

भारती जी का यह संग्रह सन् 1955 में प्रकाशित हुआ था। 'चाँद और टूटे हुए लोग' में नौ कहानियाँ नई है, शेष सोलह पूर्ववर्ती संग्रहो से ली गई हैं। इनमें 'हरिनाकुस का बेटा' महत्वपूर्ण कहानी है जो 'गुलकी बन्नो' की पूर्व सूचना देती है।

मनुष्यों को फाँसी लगाने वाले हरिनाकुस की पेशेवर बाध्यता एक ओर है तो मनुष्यता दूसरी ओर। मनुष्य की ऊपरी निर्ममता ओर कठोरता के कवच को भेद कर किसी तरह उसके भीतरी देवता के दर्शन कराना प्रसाद जी का एक वैशिष्ट्य था – भारती प्रसाद जी को अपनी श्रद्धा अर्पित करते थे तो शायद इस वैशिष्ट्य के कारण। समाज में स्वीकृत नारी का एक रूप और उसके भीतरी असली रूप के बीच का अन्तर 'कुलटा' में दिखाते हुए भारती जी ने उसके अपार वात्सल्य के दर्शन कराए हैं।"

निष्कर्ष

भारती जी कथा–साहित्य में मार्मिकता के साथ–ही–साथ जीवन का स्वच्छ दृष्टिकोण भी निहित है। आज के मशीन युग में नैतिकता का प्रश्न जटिल है। जिस धरातल पर आज समाज खड़ा हुआ वहाँ उसे पुरानी मान्यताएँ तो समाप्त कर दी है, परंतु जीवन के नये आदर्शों को ढालने में वह असफल रहा है। भारती जी का उद्देश्य ऐसे ही समाज में एक स्वस्थ प्रेम की भावना को विकसित करना है। भारती जी के कथा–साहित्य ने हर क्षेत्र में नये आयामों का संस्पर्श किया। उन्होंने युगबोध और समकालीन परिवेश को अपने सृजन के माध्यम से रूपायित किया। मानवतावादी दृष्टिकोण से संपृक्त उनका साहित्य संपूर्ण विश्व में शांति का आकांक्षी है।

संदर्भ सूची

1. राय विवेकी, हिन्दी कहानी समीक्षा और संदर्भ, पृ.सं. 60
2. जैन सविता, हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का अनुशीलन, पृ. सं. 4
3. बांदिवडेकर चंद्रकांत, धर्मवीर भारती ग्रंथावली खंड दो, पृ.सं. 178
4. राजपाल हुकुमचंद, धर्मवीर भारती साहित्य के विविध आयाम, पृ. सं. 58
5. सिंह विजयपाल, भारतीय काव्यशास्त्र, पृ.सं. 159
6. लवानिया रमेशचंद्र, हिंदी कहानी में जीवन–मूल्य, पृ.सं. 236
7. लवानिया रमेशचंद्र, हिंदी कहानी में जीवन–मूल्य, पृ.सं. 236